### आम गांवों से अलग हटकर है जंगल में बसा 'पानपाट'

# अदृश्य तालाब, ब्यूटी पार्लर और डॉक्टर साहब!

■ इन्दौर, 21 जनवरी. क्रांति चतुर्वेदी ■

देवास जिले के कन्नौद से 37 कि.मी. दूर जंगल में बसा पानपाट. आम गांवों से एकदम अलग हटकर...! बंजारों की इस बस्ती ने जागृति की पगडंडी पर एक-दो कदम चले ही हैं कि आप अदृश्य-तालाब, ब्यूटी पार्लर और डॉक्टर साहब की मौजूदगी को महसूस करेंगे. थोड़ा गौर फरमाएंगे तो आपको यहां 'शांति सैनिक' और 'आर्थिक मददगार' भी प्राय: हर घर के आसपास तैनात नजर आएंगे.

पानपाट में इस बदलाव के पहले की पृष्ठभूमि कम दुखद नहीं है. देवास जिले का यह गांव 'डार्क जोन' में आता रहा है. जलसंकट की विकरालता का अंदाजा इसी बात से लगता है कि यहां लंबे अर्से से गर्मी में पेयजल परिवहन कर लाया जाता रहा. गांव के विकास में मुख्य भूमिका स्थानीय समाज ही अदा करे, इसी अवधारणा को यहां

उपयोग किया पानी पूरी तरह से जमीन में समा रहा है.

'टेस्ट' किया जा रहा है. चंद दिनों पहले गांव में एक टोली पहुंची और समाज को बताया गया कि आप रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले पानी की निकासी, गोबर और कचरे का किस तरह बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं. इस टोली में थे क्षेत्रीय विधायक श्याम होलानी, कलेक्टर ए.के. बर्णवाल, समाजसेवी संस्था 'विभावरी' के सुनील चतुर्वेदी, सुनील बघेल और सोनल शर्मा. कुछ दिनों बाद ही गांव के समाज ने इस टोली को अपना 'उत्तर' दे दिया, पानपाट को एक सुंदर और जागृत गांव में तब्दील कर.

गांव में अब हर घर के पास अपनी एक संरचना तैयार है. 5×5 के गड्ढे खोदकर घर के पानी की निकासी इनमें छोड़ दी गई है. इनके दो-तिहाई हिस्सों में बोल्डर और शेष भाग में रेत भर दी गई है. सतह से आभास भी नहीं होता कि गांव के बदलने का राज यहां छुपा है. बकौल सुनील चतुर्वेदी- 'औसतन हर घर से दस बाल्टी पानी हर रोज नहाने, बर्तन साफ करने या कपड़े ( शेष पृष्ठ 9 पर )

## प्रथम पृष्ठ के शेष

दिया जाए तो 'अदृश्य तालाब' की मौजूदगी महसूस की जा सकती है. इसका असर एक-दो साल बाद पता चलेगा.

इन संरचनाओं को गांव में 'डॉक्टर साहब' की संज्ञा भी दी जा रही है. पानपाट में शोध-सर्वेक्षण के बाद यह दुखद तथ्य भी सामने आया है कि यहां 43 प्रतिशत महिलाएं पेट के इन्फेक्शन से ग्रसित हैं. इसमें अमीबियासिस भी शामिल हैं. इसका कारण गांव में गोबर और गंदे पानी के मिलने के बाद मच्छरों-बैक्टीरिया के फलने-फूलने की वजह ही है. जल संवर्द्धन के साथ-साथ ये सोख गड्ढे गांव में तमाम तरह की महामारी को नियंत्रित करने की भूमिका में भी रहेंगे. इसलिए गांव का समाज इन्हें बाअदब 'डॉक्टर' की भूमिका में भी देखता है, जो हर वक्त उसके पास मौजूद है. गांव में एक बदलाव और आया है, इधर-उधर पड़े गोबर को एकत्रित कर नाडेप का आकार दिया गया है. बायोकल्चर प्रयोग करने से केवल 15 दिनों में ही खाद तैयार हो जाती है, एक रुपए चालीस पैसे प्रतिकिलो के भाव से खाद का बाजार भी अब इन लोगों के लिए तैयार है. पहले गोबर को पड़े भर रहने देने से दीमक लग जाती थी. यह फसल को भी नुकसान पहुंचाती थी. इसके अलावा इस कच्ची खाद से खेत में खरपतवार की समस्या भी बढ़ जाती थी. अब गोबर के ढेर को गोमूत्र और काली मिट्टी से लीपकर तैयार कर दिया जाता है. इसकी लागत कुछ भी नहीं है. दो हजार रुपए प्रति नाडेप ईंट व परिवहन के इसलिए बच रहे हैं, क्योंकि इसे पूरी तरह से 'देसी-पद्धति' से बनाया गया है.

चतुर्वेदी और बघेल कहते हैं- खाद बनने की नई शुरुआत के बाद गांव में गोबर से बनी ये संरचनाएं अदृश्य रूप से 'आर्थिक मददगार' की भूमिका में भी हैं. पानी व गोबर के प्रबंधन से पूरा गांव अब सुंदर गांव में बदल गया है. ऐसा महसूस होता है, मानों गांव के लिए कोई 'ब्यूटी पार्लर' सक्रिय हो गया है, जो केवल बाहरी ही नहीं, बल्कि भीतरी सौन्दर्य को भी निखार रहा है, क्योंकि अपने परिवेश के प्रति यह 'जिंदा गांव' बन गया है. इन सोख गड्ढों के बनने से गांव में 'अदृश्य शांति सैनिक' की उपस्थिति का भी अहसास हो रहा है. पहले एक घर से निकला पानी दूसरे घर के दरवाजे के आगे जाकर फैल जाया करता था. वहां मवेशी के गोबर करने से गंदगी बढ़ जाया करती थी. इससे विवाद होता था. सोख गड्ढे यहां 'अदृश्य शांति सैनिक' की भूमिका में हैं. पानी व गोबर किसी घर के आगे नहीं होगा तो इस बात पर कैसा विवाद! इस पर एक और अच्छाई कि गांव में नशाबंदी हो गई व बच्चों ने भी पाउच खाना छोड़ दिया. पानपाट की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के साथ-साथ गांव का मनोविज्ञान बदलने के भी प्रयास किए जा रहे हैं. विधायक श्याम होलानी कहते हैं- हमारा प्रयास है कि पानपाट का समाज पूरे क्षेत्र में प्रकाश स्तंभ की भूमिका में आकर दूसरे गांवों को भी इसी तरह बदलने का रास्ता दिखाए. यह मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंह की मंशा के अनुरूप है, जिसमें उन्होंने आगामी ग्रामसंपर्क को 'स्वच्छता अभियान' पर केन्द्रित करने का फैसला किया है. राजीव गांधी स्वास्थ्य मिशन के संचालक डॉ. मनोहर अगनानी कहते हैं- पानी आंदोलन में समाज की सहभागिता की सफलता के बाद ग्रामीण स्वच्छता के परिदृश्य पर मध्यप्रदेश के गांवों की नई तस्वीर उभरेगी. समाज पहल करे तो हर गांव सुंदर व स्वस्थ गांव में बदल सकता है.